आर्किड

आर्किड पुष्पीय पौधों का एक बड़ा समूह है, जो अपने विविध रंग और आकार के मनोहर फूलों की विशेषता के कारण पसंदीदा खेती के तौर पर विश्व प्रसिद्ध है। संभवत: ऑर्किडेसी विश्व में पुष्पीय पौधों का सबसे बड़ा कुल है, जिसमें 28,349 प्रजातियों के स्वीकृत नाम सम्मिलित हैं तथा इसकी व्याप्ति उत्तर मेरु और अंटार्कटिक क्षेत्रों को छोड़कर विश्व के हर कोने में है। भारत में इसकी लगभग 1300 प्रजातियां तटीय क्षेत्रों से लेकर ऊंचे पर्वत चोटियों तथा द्वीप समूहों तक वितरित हैं। संख्या के दृष्टिकोण से भारत में पुष्पीय पौधों में यह कुल *पोएसी* कुल के ठीक पीछे है।

आर्किड की लगभग 400 प्रजातियां भारत में स्थानिक मानी जाती हैं, जिनमें 5 स्थानिक वंश (genus) : एन्हेनरिया (Aenhenrya), इंडिया (India), जेजोसेफिया (Jejosephia), स्मिथसोन्या (Smithsonia) एवं जेनिकोफाइटोन (Xenikophyton) सम्मिलित हैं। एराक्निस (Arachnis), एस्कोसेंट्रम (Ascocentrum), सिम्बिडियम (Cymbidium), डेंड्रोबियम (Dendrobium), एस्मेराल्डा (Esmeralda), पाफियोपेडिलियम (Paphiopedilium), पापिलियोनेन्थे (Papilionanthe), प्लियोनी (Pleione) व वांडा (Vanda) जैसी सुंदर और सजावटी जातियां भारत में संकरण प्रयोगों के लिए इस्तेमाल की जाती हैं। किसी अन्य एकबीजी पौधों की तरह आर्किड के फूलों में भी 3 बाह्य और 3 अंतरस्थ पंखुड़ियां होती हैं। परंतु अंतरस्थ पंखुड़ियों में से एक पंखुड़ी रूपांतरित होकर रंग, आकार, बनावट और संरचना में भिन्न हो जाती है जिसे "लिप (Lip)" या "लेबेलम (Labellum)" कहा जाता है। फूलों के भीतर की बेलनाकार संरचना नर और मादा पुष्पांगों के विलय से बनती है जिसे स्तंभ (Column) या गाइनोस्टेमियम (Gynostemium) कहा जाता है। आर्किड फूलों का आकार वस्तुत: इन दो संरचनाओं पर निर्भर होता है। आर्किड सामान्यत: अपने अत्यंत सुंदर फूलों के लिए प्रसिद्ध है । लेकिन इसके कुछ उप-कुल (sub-tribe) खासकर *गुडाइरिनी* (Goodyerinae) की जातियां छोटे व अनाकर्षक फूल धारण करती हैं। साथ ही इसकी कुछ जातियां अपने अत्यंत सुंदर और रंग-बिरंगे पत्तों के लिए खास होती हैं। इसके लिए ये "अलंकार आर्किड (Jewel Orchid)" के नाम से प्रसिद्ध हैं। आर्किड फूलों की जटिल संरचना जैविक पराग संगम को सफल बनाने में सहायक होती है तथा इसके लिए इन्हें अन्य कुल के पौधों से अधिक विर्वतित माना जाता है। आर्किड भंगुर परिस्थानिक तंत्र में वास करते हैं तथा सूक्ष्म वातावरण के प्रति बेहद संवेदनशील होते हैं। इनका प्रजनन बहुत हद तक परागण और अनुकूल सहजीवी माइकोराइजा (Mycorrhiza) की उपलब्धता पर निर्भर है। आर्किड के अपार बागवानी व औषधीय महत्व, जटिल पुष्प संरचना एवं जीवन चक्र के कारण वैज्ञानिकों, उद्यान प्रेमियों, व्यापारियों और उद्यमियों के बीच आर्किड अध्ययन को विज्ञान की एक अलग शाखा के रूप में रोचक विषय का दर्जा प्राप्त है।

आर्किड फूलों के सजावटी महत्व को प्राचीन चीनवासियों ने कनफ्यूशियस के समकालीन (551-479 ई.प.) लगभग 2000 वर्ष पहले पहली बार मान्यता दी थी। पश्चिमी दुनिया में 19वी शदी में जाकर आर्किड के सजावटी महत्व का पता चला।

आर्किड फूलों का व्यवसाय एक फलता-फूलता व्यापार बन चुका है। आकर्षण, लंबा स्वजीवन, उच्च उत्पादकता, पैकिंग और परिवहन सुलभ होने के कारण, आर्किड फूलों के उद्योग में एक महत्वपूर्ण स्थान ले चुका है। फूलों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में आर्किड फूलों का 10% योगदान है।

आर्किड के महत्व को देखते हुए इसकी निम्नलिखित छ: जातियों का डाक टिकट भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी किया जाता है :

1. **साइप्रिपिडियम हिमालयकम रॉल्फ (हिमालयन साइप्रिपिडियम) :** साइप्रिपिडियम हिमालयकम एक बहुत दुर्लभ प्रजाति है, जो हिमालय के तंद्रा और उपतंद्रा क्षेत्रों में, कुछ छिटपुट उपसमूहों में (अब गंभीर रूप से खंडित), ज्यादातर छोटी कालोनियों में पाई जाती है। यह प्रजाति अत्यधिक चराई, संग्रह, वनों की कटाई, विध्वस्त परिस्थान जैसे विभिन्न खतरों से जूझ रही है। यह जलवायु परिवर्तन के प्रति भी काफी संवेदनशील है जिसके परिणामस्वरूप इसकी संख्या निरंतर कम होती जा रही है। प्रकृति एवं प्राकृतिक संपदा के संरक्षण हेतु अंतर्राष्ट्रीय संस्थान आईयूसीएन (IUCN) द्वारा निर्धारित मापदंड के अनुसार इस प्रजाति को "विलुप्तप्राय:" (Endangered-EN) के रूप में मूल्यांकित किया गया है।

2. **पाफियोपिडिलम विलोसम (लिंडल) स्टिन (विलोस पाफियोपिडिलम) :** अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए अंधा-धुंध संग्रह के कारण इस प्रजाति की संख्या हाल के दिनों में काफी कम हो गई है। आई.यू.सी.एन. (IUCN) द्वारा इस प्रजाति को अरक्षित (Vulnerable-VU) के रूप में मूल्यांकित किया गया है तथा CITES के परिशिष्ट-1 में शामिल किया गया है।

3. **डेंड्रोबियम गिब्सोनी लिंडल (गिब्सन का डेंड्रोबियम) :** यह डेंड्रोबियम अपनी सुंदर फूलों और मीठी सुगंध के लिए प्रसिद्ध है। इस प्रजाति में फूल खिलने का समय निर्दिष्ट नहीं होता है तथा प्रकृति में इसके फल कभी नहीं देखे गए हैं। कभी-कभी इसमें असामान्य रूप से अधिक संख्या में फूल खिलते हैं।

4. **डेंड्रोबियम फाल्कोनेरी हुकर (फाल्कोनर का डेंड्रोबियम) :** यह डेंड्रोबियम अपने अनोखे पतले काण्ड और उसके सूजे हुए नोड्स के लिए प्रसिद्ध हैं। सूजे हुए नोड्स के कारण यह माले की दाने की तरह दिखाई देती है। इसके फूल बड़े-बड़े और सजावटी होते हैं।

5. **एस्मेराल्डा केथकारटि (लिंडल) रिचेनवाक एफ. (केथकारट का एस्मेराल्डा) :** यह प्रजाति हिमालय में स्थानिक है जिसका अत्यधिक दोहन बागवानी प्रयोजनों हेतु किया जाता है। यह वांडा (Vanda) की तरह दीर्घजीवी होती है तथा इसमें बड़े-बड़े फूल खिलते हैं। इसके फूलों का इस्तेमाल विभिन्न संकरण प्रयोगों में सफलतापूर्वक किया जाता है।

6. **एस्मेराल्डा क्लार्केई रिचेनवाक एफ. (क्लार्क का एस्मेराल्डा) :** यह प्रजाति वांडा (Vanda) जैसी एक महत्वपूर्ण आर्किड है। इसका दोहन भी इसके सुंदर व दीर्घायु फूलों के लिए किया जाता है।

डाक विभाग आर्किड पर 6 स्मारक डाक-टिकटों का एक सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ	:	भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विरूपण	:	श्रीमति नीनू गुप्ता

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500पैसा(2),1500पैसा(2),2500पैसा(2)
Denomination	:	500 p(2), 1500 p(2), 2500 p(2)
मुद्रित डाक टिकटें	:	2.0 लाख प्रत्येक
Stamps Printed	:	0.2 million each
मुद्रित मिनिएचर शीट	:	1.0 लाख
Miniature Sheet printed	:	0.1 million
मुद्रित शीटलेट	:	25,250 प्रत्येक (6 प्रकार)
Sheetlets printed	:	25,250 each (6 Types)
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The above philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

Orchids

Orchids are a large group of flowering plants that are being cultivated and appreciated the world over for their stunningly beautiful flowers of varying hues, shapes and sizes. Orchidaceae is probably the largest family of flowering plants in the world with around 28349 accepted names and are cosmopolitan in distribution barring the Arctic and Antarctic regions. In India, it stands behind Poaceae amongst the angiosperms and have nearly 1300 taxa, widely distributed from alpine to coastal regions and Islands.

About 400 species of orchids are believed to be endemic to India with 5 endemic genera such as *Aenhenrya, India, Jejosephia, Smithsonia and Xenikophyton*. Some of the most showy species much used in breeding works are from India and they belong to the genera *Arachnis, Ascocentrum, Cymbidium, Dendrobium, Esmeralda, Paphiopedilum, Papilionanthe, Pleione and Vanda*. Like other monocotyledonous plants orchid flowers too have 3 outer sepals and 3 inner petals. But one of the inner petals gets modified into a differently looking, more colourful, sometimes even bizarre-shaped structure called lip (labellum). The inner most cylindrical structure is the fusion product of male and female sex organs called column or *gynostemium*. The shape of an orchid flower, in fact, is decided by these two structures. Though orchids are known for their extremely beautiful flowers, a few orchids, especially members of the subtribe Goodyerinae produce small, non-attractive flowers. However, several of them are very special with beautiful reticulate to mottled foliage for which they are often admired and called 'Jewel Orchids'. The complex floral structure to facilitate biotic cross pollination makes the Orchids evolutionarily more superior to other plant families. The Orchids inhabit fragile ecosystems and are extremely sensitive to their micro-environment. Their reproduction largely depends on the availability of pollinators and suitable mycorrhiza. The immense horticultural and medicinal importance, coupled with complex floral structure and life cycle of orchids have attracted the scientific community, horticulturists, commercial growers and entrepreneurs to take up orchid biology as a separate branch of science.

The ornamental value of orchid flowers was first recognized 2000 years ago by the ancient Chinese during the period of Confucius (551-479 B.C.). The western world came to know about the decorative value of orchids only during the 19th century.

The floriculture trade based on orchids is a growing business. The orchids have taken a significant position in cut flower industry due to their attractiveness, long shelf-life, high productivity, convenience in packing and transportation. Among flowers, orchids contribute 10% share in international trade.

The Department of Posts is delighted to release a set of six stamps on following varieties of Orchids.

1. ***Cypripedium himalaicum Rolfe [The Himalayan Cypripedium]:*** *Cypripedium himalaicum* is a very rare species, known only from a few scattered subpopulations (now severely fragmented), mostly in very small colonies in alpine and sub-alpine Himalaya. The species is subjected to various threats like overgrazing, ruthless collection, habitat loss due to trampling, deforestation etc. It is also sensitive to climate change, resulting in continuing decline of population. It has been assessed as 'Endangered-EN' as per International Union for Conservation of Nature and Natural Resources (IUCN) criteria.

2. ***Paphiopedilum villosum (Lindl.) Stein ['Villose Pahiopedilum']:*** The population size of this species has been significantly reduced in recent times due to indiscriminate collection for international trade. It has been assessed as 'Vulnerable-VU' as per International Union for Conservation of Nature and Natural Resources (IUCN) criteria and included under APPENDIX-I of Convention on International Trade in Endangered Species of Wild Fauna and Flora (CITES).

3. ***Dendrobium gibsonii Lindl. [Gibson's Dendrobium]:*** This *Dendrobium* is known for its beautiful flowers and sweet fragrance. This species have fluctuating flowering time and fruits are not seen in nature. Sometimes it produces unusually high number of inflorescence per stem.

4. ***Dendrobium falconeri Hook. [Falconer's Dendrobium]:*** This *Dendrobium* is uniquely characterized by thin stems with swollen nodes, giving a bead-like appearance. The flowers are remarkably large and ornamental.

5. ***Esmeralda cathcartii (Lindl.) Rchb.f. [Cathcart's Esmeralda]:*** This species is a Himalayan endemic and is exploited for horticultural purposes. They possess large, long-lasting vandaceous flowers and are compatible in many hybridization experiments.

6. ***Esmeralda clarkei Rchb.f. [Clark's Esmeralda]:*** This is another significant vandaceous orchid, exploited for the beautiful and long lasting flowers.

The Department of Posts is pleased to release a set of 6 commemorative postage stamps on Orchids.

Credits:-

Text	:	Based on the material received from Botanical Survey of India
Stamp / Miniature Sheet / Cancellation Cachet	:	Ms. Nenu Gupta

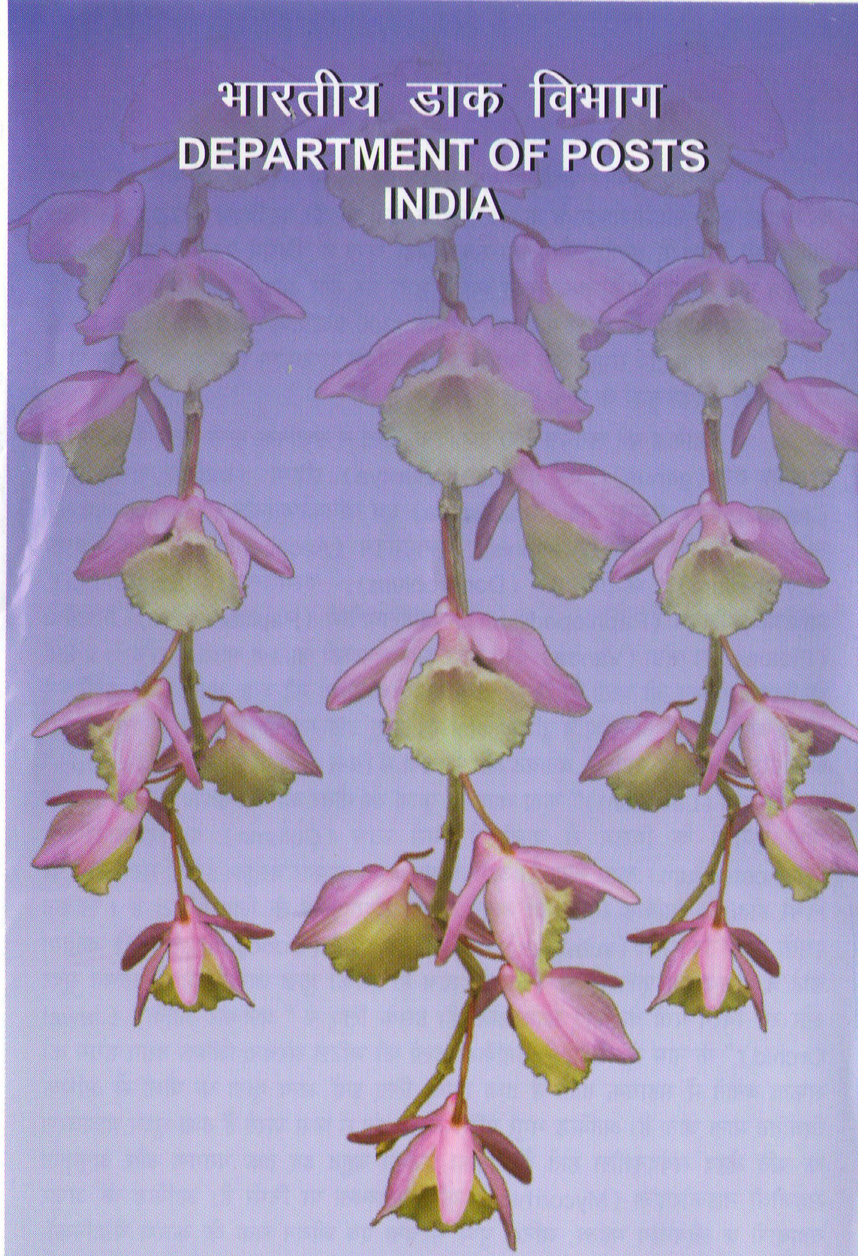

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

आर्किड्स ORCHIDS

विवरणिका BROCHURE